जेल में मिली नई राह

● राजीव कुमार त्रिपाठी, जिला कारागार, देवरिया

मेरा लौकिक घर गोरखपुर में है। घर में लौकिक माता, एक बहन तथा एक भाई है। बचपन से ही मेरा भक्ति से लगाव था। श्रीकृष्ण, श्रीविष्णु, श्रीदुर्गा की पूजा करता था। अपने सभी बड़ों से पूछता था कि हमारे इतने भगवान हैं, उनमें सबसे बड़ा कौन है? ब्रह्मा, विष्णु, शंकर में बड़ा कौन है? जब मैं तीन-चार साल का था तो मेरे पिताजी का देहांत हो गया। अपने सभी मित्रों के पिताओं को देखता तो अकेले में और पूजा करते समय यही कहता कि भगवान, सभी के पिता हैं, मेरे नहीं हैं, आप खुद मेरे पिता बनकर आ जाओ, मुझे प्यार करो और मैं रोता रहता।

बचपन से क्रोधी बहुत था। बड़ा हुआ तो देह-अभिमान और बढ़ा, इस कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बढ़े। मैं गलत संगत में फँस गया। गुटखा, पान खाने लगा; बीयर, सिगरेट भी पीने लगा। फिर मेरे ऊपर डबल हत्या के साथ-साथ अन्य बहुत-से मुकद्दमे दर्ज हो गये। मैं जेल चला गया। गाली देना, बात-बात में किसी को मार देना मेरा स्वभाव बन गया। पूजा-पाठ करता था लेकिन पूजा से उठते ही विकर्म (क्रोध) करना शुरू हो जाता था। लोगों ने मेरा नाम ही दुर्वासा रख दिया। क्रोध में मैं देवी-देवताओं को भी गाली देता था।

सन् 2007 में मैं गोरखपुर जेल में आया। सन् 2010 में ब्रह्माकुमारी बहनें व ब्रह्माकुमार भाई जेल में आये। राजयोग सिखलाया। मेरे साथ रहने वाले बहुत से कैदी भाई राजयोग सीखने जाने लगे। वे कहते कि भगवान इस धरती पर आ गये हैं। हम देवी-देवता बनेंगे। वे हमसे भी राजयोग सीखने को कहते पर मैं पूजा-पाठ ही करता रहा।

गोरखपुर जेल में झगड़ा होने के कारण मेरा तबादला देवरिया जेल में हो गया। मुझे दंड भी मिला। जिससे झगड़ा हुआ, उसके प्रति मेरे मन में बदले की भावना थी। मैं दिन-रात उसी बारे में सोचता रहता। संयोग से बैरक नं.3 में एक ब्रह्माकुमार भाई ने मुझे ज्ञानामृत व कोर्स की किताबें पढ़ने को दीं, मुझे अच्छा लगा। फिर मैंने कोर्स किया और योग करने लगा। स्वदर्शन चक्र फिराने लगा। कुछ समय बाद जेल में नियमित क्लास शुरू हो गई।

चरित्र में परिवर्तन

ज्ञान मिलने के बाद सर्वशक्तिवान की शक्तियाँ मिलती गईं और खान-पान में पवित्रता आती गई। लहसुन, प्याज, गुटखा, बीयर आदि सहज छूट गये। क्रोध भी खत्म होने लगा। शुरू

में विरोध हुआ, लोगों ने पागल कहना शुरू किया, फिर सभी सहयोगी बन गये। सभी मुझे प्यार करने लगे। मेरी बदला लेने की भावना भी बदल गई। अधीक्षक साहब (शर्मा जी) व उप-जेलर (राय साहब) व सभी बंदी भाइयों व बंदी रक्षकों का पूरा सहयोग मिला। पहले सभी से ईर्ष्या करता था, अपने को दुर्भाग्यशाली समझता था। जेल का समय जीवन की बर्बादी लगता था पर अब अपने को भाग्यशाली इसलिए समझता हूँ कि जेल में आकर नई श्रेष्ठ राह मिली।

अड़तीस वर्ष की उम्र तक शादी न होने के कारण हीनभावना से ग्रसित था। पर अब राज़ को समझा कि बाबा ने कल्याण ही किया, पवित्र रखा। अब तो प्रतिज्ञा की है कि पवित्र रहना है। हम 30 भाई ईश्वरीय महावाक्य सुनते हैं। बाबा मुझे निमित्त बना सुनाता है। अब तो बस यही खुशी है कि भगवान ने स्वयं मुझे खोज लिया। हम ईश्वरीय पालना में पल रहे हैं।

बचपन के संकल्प पूरे हुए

मैं बाबा (भगवान) से कहता था कि आप मेरे पिता बन जाओ तो सही में बाबा ने मुझे अपना बच्चा बना लिया। अब तो बस यही इच्छा है कि जैसे मेरा भाग्य बदला, कल्याण हुआ, वैसे ही सभी आत्माओं का कल्याण हो। सभी भाई-बहनों से अनुरोध है कि अभी भगवान आये हुए हैं, वर्तमान संगमयुग में सभी अपना भाग्य बनायें। राजयोग सीखकर मनुष्य से देवता बनें। परमात्मा ज्ञान के सागर, सुख के सागर, प्रेम के सागर, आनन्द के सागर, पवित्रता के सागर, शान्ति के सागर, सर्वशक्तिवान हैं। सभी संबंधों का सुख देने वाले हैं। ❖

मेरे सुहाने बाबा

ब्रह्माकुमार सत्यप्रकाश, छिबरामऊ (कन्नौज)

मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।
तेरी याद में ही गुज़रें जीवन के पल ये सारे।
तेरी याद का ही दम है, श्रीमत पर हर कदम है।
निश्चय हुआ है जब से, सेवा ही बस धर्म है।
हासिल अपार खुशियाँ, हुए आप जो हमारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

ये ज्ञान आपका है योगी मुझे बनाया।
माया को दूर करके दे दिया अपना साया।
पाया नहीं हितैषी, जग में सिवा तुम्हारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

अब फर्ज मेरा है ये बन आपका दिखाऊँ।
हासिल करूँ गुणों को सब शक्तियाँ मैं पाऊँ
मझधार जो है नइया लग जायेगी किनारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

पूँजी पवित्रता की, सबसे बड़ी कमाई।
रखना इसे सुरक्षित, बाबा से जो है पाई।
जिसने इसे गंवाया सब कुछ वो अपना हारे।
मेरे सुहाने बाबा, मनमीत मेरे प्यारे।।

राजयोग से मन की शान्ति

ब्रह्माकुमारी आशा, चित्तौड़गढ़ (राज.)

आज मनुष्य स्वयं के सत्य परिचय को भूल गया है। वह स्वयं को देह मान बैठा है इसलिए उसे शान्ति व चैन नहीं है। वह देह और देह के आकर्षण में फँसा हुआ है। सच्ची मन की शान्ति के लिए जंगलों में, तीर्थों पर भटक रहा है फिर भी अशान्त ही रहता है।

जब गर्मी के कारण बेचैनी होती है तो हम कूलर, पंखे या फिर ए.सी.(एयर कंडीशनर) के उपयोग से शीतलता का अनुभव करते हैं। वास्तव में यह शीतलता तो शरीर को राहत देती है, न कि मन को। क्रोध अग्नि में जलते हुए मनुष्य को कोई ए.सी.या कूलर शीतलता प्रदान नहीं कर सकते। मन की शान्ति हमें राजयोग से मिलती है। आत्मा और शरीर दोनों अलग-अलग हैं। इसे समझ लेने से मन की सच्ची शान्ति अनुभव कर सकते हैं। हम आत्मा हैं, इसकी सूक्ष्म शक्तियाँ मन-बुद्धि-संस्कार हैं। आत्मा चैतन्य शक्ति है, यह सात मूल गुणों का पुँज है, ये सात गुण हैं – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति। आत्मा परमपिता परमात्मा शिव की संतान है। शरीर आत्मा का वस्त्र है जिसे धारण कर आत्मा पार्ट बजाती है। आत्मा अविनाशी और शरीर विनाशी है। शान्ति तो गले का हार है। शान्ति तो आत्मा का स्वधर्म है। यह राज़ स्वयं शिव पिता, प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से समझा रहे हैं।

राजयोग की यथार्थ विधि मन की सच्ची शान्ति का अनुभव कराने वाली है। इस विधि द्वारा स्वयं को आत्मा समझ, उस निराकार, ज्ञान-गुणों के सागर शिव परमात्मा से बुद्धि को जोड़कर हम असीम शांति का अनुभव कर सकते हैं व अनेकों को इसका अनुभव कराने के माध्यम बन सकते हैं। ❖